राज
कॉमिक्स
मूल्य 15.00 संख्या 85
नागराज
कोबरा घाटी
इस कॉमिक के साथ नागराज का एक
पोस्टर मुफ्त
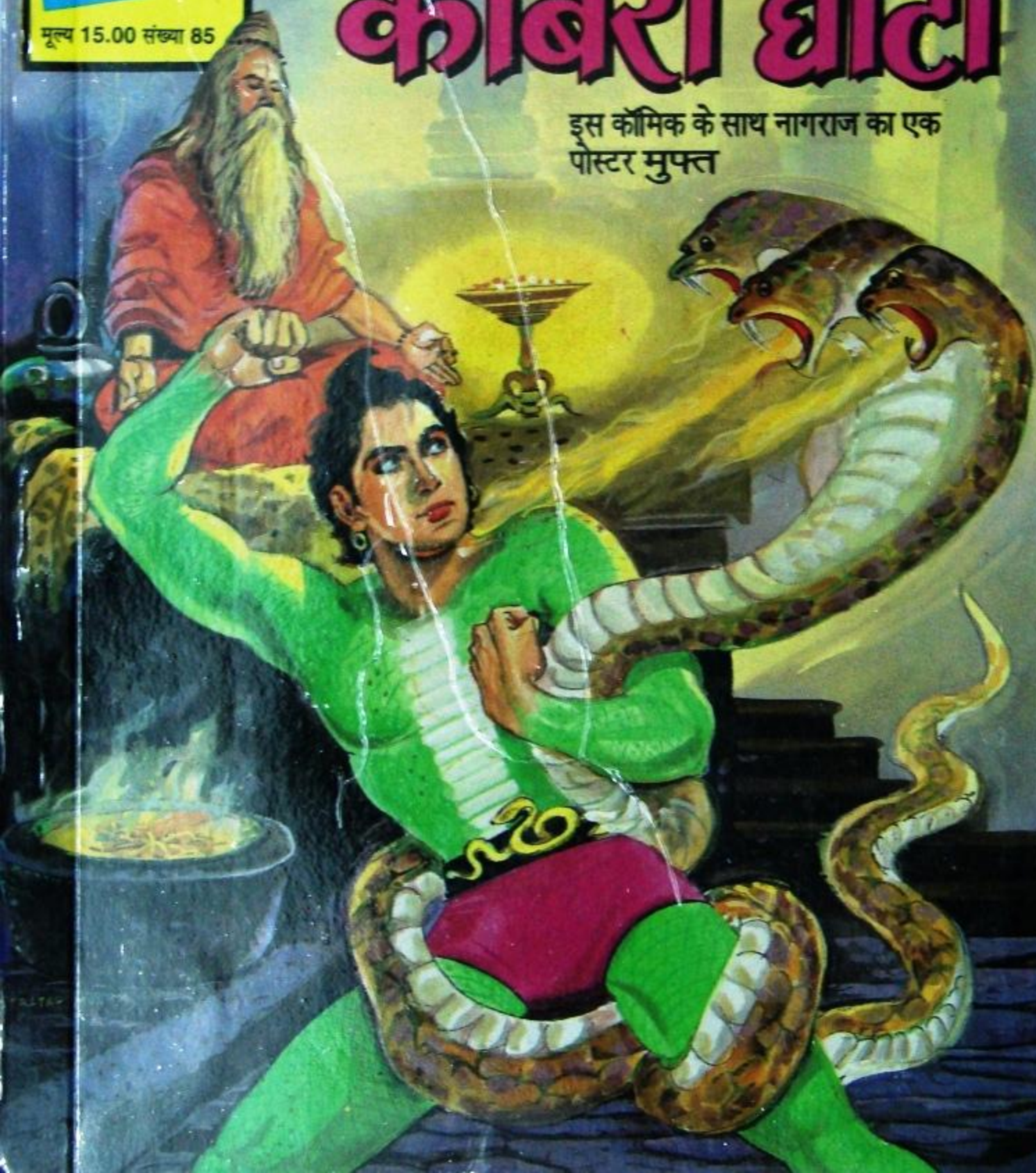
कोबरा घाटी

लेखक : राजा
कलादिग्दर्शक : प्रताप मुल्लीक
चित्रकार : चंदु, विनय एम. कुमार
सम्पादक : मनीष गुप्ता

पूर्वकथा "खूनी कबीला" में आपने पढ़ा - दक्षिण अफ्रीका के एक गुलाम द्वीप पर जनरल टमटा का शासन है। वहां के काले मूल निवासियों पर जनरल टमटा तरह-तरह के अत्याचार करता है। नागराज उस द्वीप पर उतरता है और कुछ क्रान्तिकारी युवकों के साथ द्वीप की भोली जनता को जनरल टमटा के दमनचक्र से मुक्त कराने का प्रण लेता है। खूनी कबीले का सरदार टांगो जनरल टमटा की आज्ञा से नागराज को पकड़ने के लिए जाता है और नागराज को अपने मुंह से निकलने वाली आग से घायल कर देता है। और पोमा-चोमा व सुग्रा को अन्य बस्ती वालों के साथ बंदी बनाकर ले जाता है। घायल नागराज को बाबा गोरखनाथ ने महर्षि ज्वालानाथ का पता बताया - जो उसे टांगो की मुखाग्नि से बचा सकते थे। नागराज अपने हैलीकॉप्टर पर सवार होकर महर्षि ज्वालानाथ की तलाश में निकल पड़ा।

नागराज ने हैलीकॉप्टर सुप्त ज्वालामुखी पर उतारा —
घर्र्र

नागराज हैलीकॉप्टर से उतरकर ज्वालामुखी के मुहाने पर आ गया।
उस बड़े छेद में ही ज्वालानाथ जी का वास होगा।

फिर वह बेहिचक ज्वालामुखी की दीवार पर रेंगने लगा —

छेद के पास पहुंचकर वह एक क्षण रुका...
अब अंदर जाता हूं!

...और फिर वह अंदर प्रविष्ट हो गया।
यहां तो कोई नजर नहीं आ रहा!

तभी —
ओह! इतने सांप!
सांय
सांय
चारों तरफ से निकले बहुत से सांपों ने नागराज को घेर लिया।

हूं ऊ... ये मेरा क्या बिगाड़ेंगे!
इससे पहले कि नागराज आगे बढ़ता...

...उनमें से एक नाग ने मानव रूप धारण कर लिया—
ठहरो युवक! कौन हो तुम? यहां क्यों आए हो? यहां से आगे बढ़ोगे तो सीधे यमपुरी जाओगे।

मेरा नाम नागराज है। मुझे महर्षि ज्वालानाथ जी से बहुत जरूरी काम है और मैं उनसे मिलकर ही जाऊंगा।
ज्वालानाथ जी से कोई नहीं मिल सकता युवक! वे साधना में लीन हैं।

नागराज आगे बढ़ा—
देखता हूं मुझे कौन रोकता है?
अब अपने अंजाम के तुम स्वयं जिम्मेदार होगे!

नागपुरुष ने पलट कर अपने दंड से नागराज पर प्रहार किया।
धड़ाक

नागपुरुष फिर झपटा–
कड़ाक
उफ़! इसके दंड में तो घातक विष भरा हुआ है।

नागराज ने सम्भलकर नागपुरुष पर वार किया–
मुझे इसे और मौका नहीं देना चाहिए!

और फिर उसने उस पर मुक्कों की वर्षा कर दी।
धाम
धूम
नागराज को रोकना इतना आसान नहीं है दोस्त!

फिर–
अब तुम तब तक नहीं हिलोगे, जब तक मैं ज्वालानाभ जी से मिलकर वापस नहीं आ जाता!
शूं...शूं

किन्तु इससे पहले कि नागराज आगे बढ़ता बहुत से नागों ने उसे घेर लिया।
शूंऽऽऽ
फूं!
शांएंऽऽ

नागराज ने कराटे के वारों ...

... व जहरीली फुफकारों से कइयों को परलोक पहुंचा दिया।
फुस्स

सांए... शं
इनकी संख्या बढ़ती जा रही है। ये मेरा समय ही खराब करेंगे। मुझे अपनी नागसेना से काम लेना होगा।

नागसेना के नागों ने वहां कहर मचा दिया।
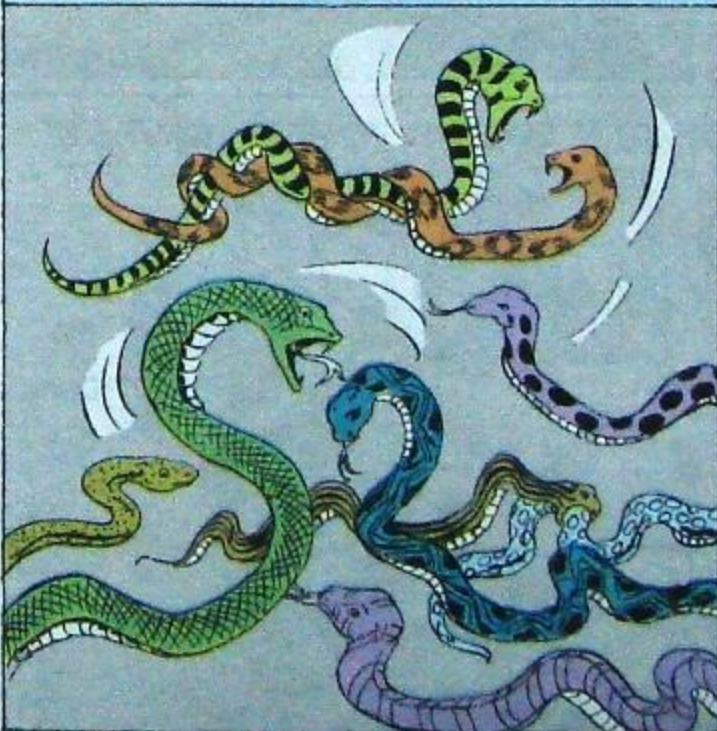
नागपुरुष से नागों की तबाही न देखी गई।
ठहरो युवक! लड़ाई रोको। इनको मत मारो। मैं तुम्हें महर्षि तक पहुंचने का रास्ता बता देता हूं।

नागराज ने नागसेना को वापस बुला लिया और नागपुरुष को भी आजाद कर दिया ।
हां, अब आए हो ना रास्ते पर ।

नागपुरुष नागराज को एक छोटे से छेद के पास ले आया ।
नागराज, यह बिल ही कोबरा घाटी का रास्ता है। तुम यहां से अंदर घुस सको तो ही महर्षि से मिल सकोगे ।

नागराज मुस्कराया –
इसे तो मेरे नाग पलभर में चौड़ा कर देंगे।

नागसेना के सैंकड़ों नाग मिट्टी खोद-खोदकर नागराज के लिए रास्ता बनाने लगे –
खर्र
खर्र

कुछ ही देर बाद छोटे से दिखने वाले सुराख को नागों ने चौड़ा कर दिया ।

और नागराज उसमें उतर गया–
नीचे उसने अपने को एक सुरंग में पाया–

इससे पहले कि वह आगे बढ़ता – एक अज्ञात शक्ति उसे गुफा के अंदर खींचने लगी।
ओह!
सर्र्र्ऽऽ

और तीव्र वेग से वह एक विशाल अजगर से टकराया – अजगर की सांस के साथ ही वह यहां खिंचा चला आया था।
धाड़

!!
शूऽऽऽ

नींद खुल जाने से अजगर क्रोधित हो उठा था।
फूंऽऽऽ
ओह! जहरीली फुंफकार!

फुंफकार बेअसर होते देख अजगर ने अपनी भारी पूंछ नागराज पर दे मारी।
ठाक

चोट से तिलमिलाकर नागराज ने झपटकर अजगर की गरदन दबोच ली–
फूंऽऽऽ
गुर्ररर! भले काम में रुकावट डालता है कीड़े।

फिर उसकी आंखों को स्नेकहैण्ड के एक ही वार में फोड़ दिया।
फूंऽऽऽ

क्रुद्ध अजगर ने पलटी खाकर नागराज को अपने बंधन में जकड़ लिया।
आह!
गर्रर
जैसे-जैसे अजगर बंधन कस रहा था, नागराज को अपनी जान निकलती महसूस हो रही थी

तभी नागराज ने अजगर के शरीर पर अपने विष युक्त दांत गड़ा दिए।
अजगर की पकड़ ढीली पड़ती चली गई।

अपने घातक विष से अजगर को समाप्त कर, जब नागराज आगे बढ़ा तो उसका रास्ता रोका गर्म लावे के प्रपात ने।
ओह! यह तो बहुत ही गरम है। मैं इसे तैरकर पार नहीं कर सकता।

तभी —
वाह! छत से लावा नहीं टपक रहा।

छोटे सांप को छत पर रेंगता देख, नागराज भी छत पर चिपक गया।

और फिर तेजी से रेंगता हुआ...

...दूसरी तरफ कूद गया।
यहां तो कदम-कदम पर मौत बिछी है!

नागराज जैसे ही आगे बढ़ा...
अरे ऽऽ

...गहरे गड्ढे में जा पड़ा।
आह!

वाह गद्दा बिछा रखा है!

किन्तु अगले ही क्षण नागराज उछल पड़ा ।
आएं... यह तो सांप है !
फूंssssssss

सांप ने झपटकर उसका हाथ दबोच लिया ।
आईss

नागराज ने उसकी गरदन पकड़ ली ।
मैं तुझे भी मार दूंगा दुष्ट सांप !

कुछ ही देर में सांप तड़पकर शांत हो गया ।
अलविदा भाई !

गड्ढे से नागराज नागरस्सी के सहारे बाहर आ गया ।

जैसे ही वह आगे बढ़ा, उसका सामना दो फन वाले एक भयंकर सांप से हुआ ।
लो कर लो बात ! ये हमें रोकेंगे दो-दो मुंह से !
फूंsss

तो इनके दोनों सिरों को अलग ही कर देते हैं।

और आगे बढ़ने पर–
अरे वाह! दुर्लभ दन्तक नाग!

ओह! तो आप भी दुश्मनी कर रहे हैं भाई साहब!
फूsss

नागराज के मुष्टि प्रहार ने...
धड़ाक

...दन्तक के दो दांत हलक में और दो जमीन पर उतार दिए।
सौ सालों में इतने बड़े दांत आते हैं इसके, च..च..च.. बेचारा गंवा बैठा।

तभी जैसे हवा सी गुजर गई नागराज के सिर के ऊपर से।
उफ
यह था लोम्बू, उड़ने वाला सांप।

सांप हमला करने के लिए दुबारा पलटा लेकिन–
नागराज ने चपलता से दो अंगुलियां सांप की आंखों में घुसेड़ दीं

मुझे इन्हें मारना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता, किन्तु अभी मुझे हजारों आदमियों की जान बचानी है।

तभी–
ओह, यह तो घोड़ा पछाड़ सांप है– अत्यंत बलशाली।

सांप ने पलटी मारी।
पटाक

नागराज ने पूरी ताकत लगाकर सांप को पैरों से अलग किया...
... और खड़ा हो गया।

फिर उसने जमीन पर पटक-पटककर घोड़ा पछाड़ सांप को यमलोक पहुंचा दिया।
मुझे अफसोस है दोस्त!
सटाक

नागराज घोड़ा पहाड़ से लड़कर जैसे ही पलटा –
क्रsss
उफ़

ओह चितकबरा ! कोबरा-राज ने अपने सेना नागों को भी चुन-चुनकर रखा है। जवाब नहीं इसका भी।

अगले ही क्षण चितकबरा नागराज पर झपटा।
उफ़
सांय
नागराज ने उसका गला पकड़ने की चेष्टा की किन्तु ...

...चितकबरा के शरीर पर मौजूद कांटों ने उसे हाथ खींच लेने पर मजबूर कर दिया।
हाए, मैं तो इसके कंटीले बदन को भूल ही गया था।

चितकबरा फिर झपटा। नागराज ने उस पर मुक्का तान लिया।
आ बेटा आ ! मुंह ना सुजा दिया तो कहना।
धाड़

किन्तु चितकबरा ने मुंह की जगह शरीर आगे कर दिया।
हाए रे! चितकबरा, यह तूने क्या किया?

ओह, यह तो फिर हमला कर रहा है। मुझे समझदारी से काम लेना चाहिए। वक्त पहले ही बहुत खराब हो चुका है।

अब जैसे ही चितकबरा नागराज के पास पहुंचा—
फूं sss
नागराज ने उस पर जहरीली फुंफकार से वार किया।

चितकबरा इतना जहर न सह सका—
गलत आदमी से उलझ गये थे बेटा!
वह जमीन पर गिरकर तड़पने लगा।

फिर नागराज निर्विघ्न आगे बढ़ता गया—
वाह। लगता है, अब कोई बाकी नहीं रह गया। सुरंग भी खत्म हो रही है।
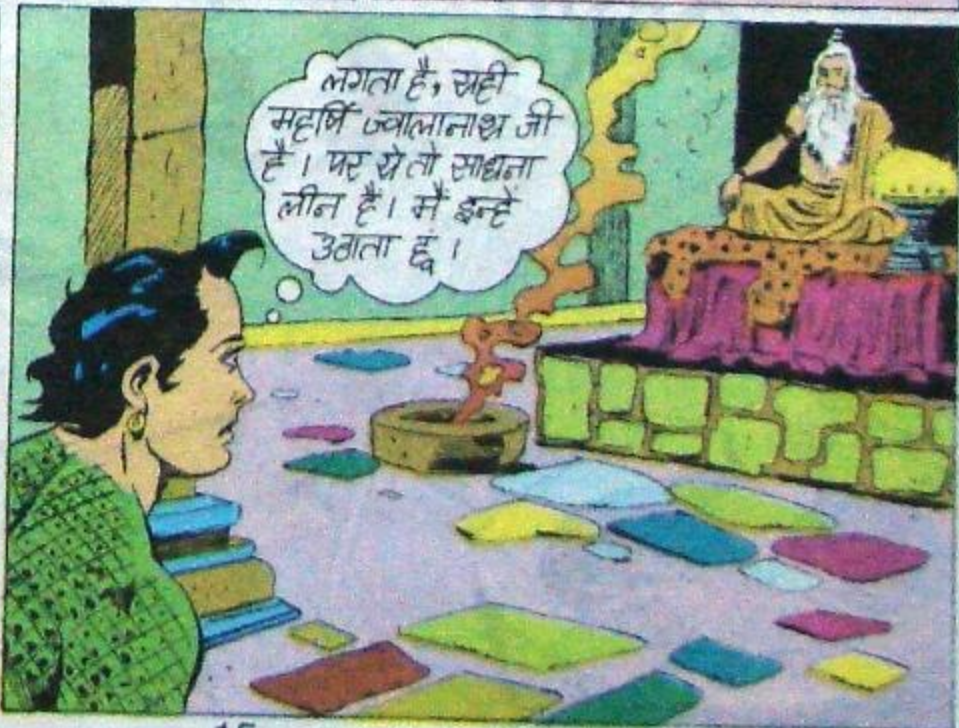
लगता है, यही महर्षि ज्वालानाथ जी हैं। पर ये तो साधना लीन हैं। मैं इन्हें उठाता हूं।

नागराज जैसे ही आगे बढ़ा, एक भयानक आवाज ने उसे जड़कर दिया।
ठहरो!
हैं! यह कौन बोला?
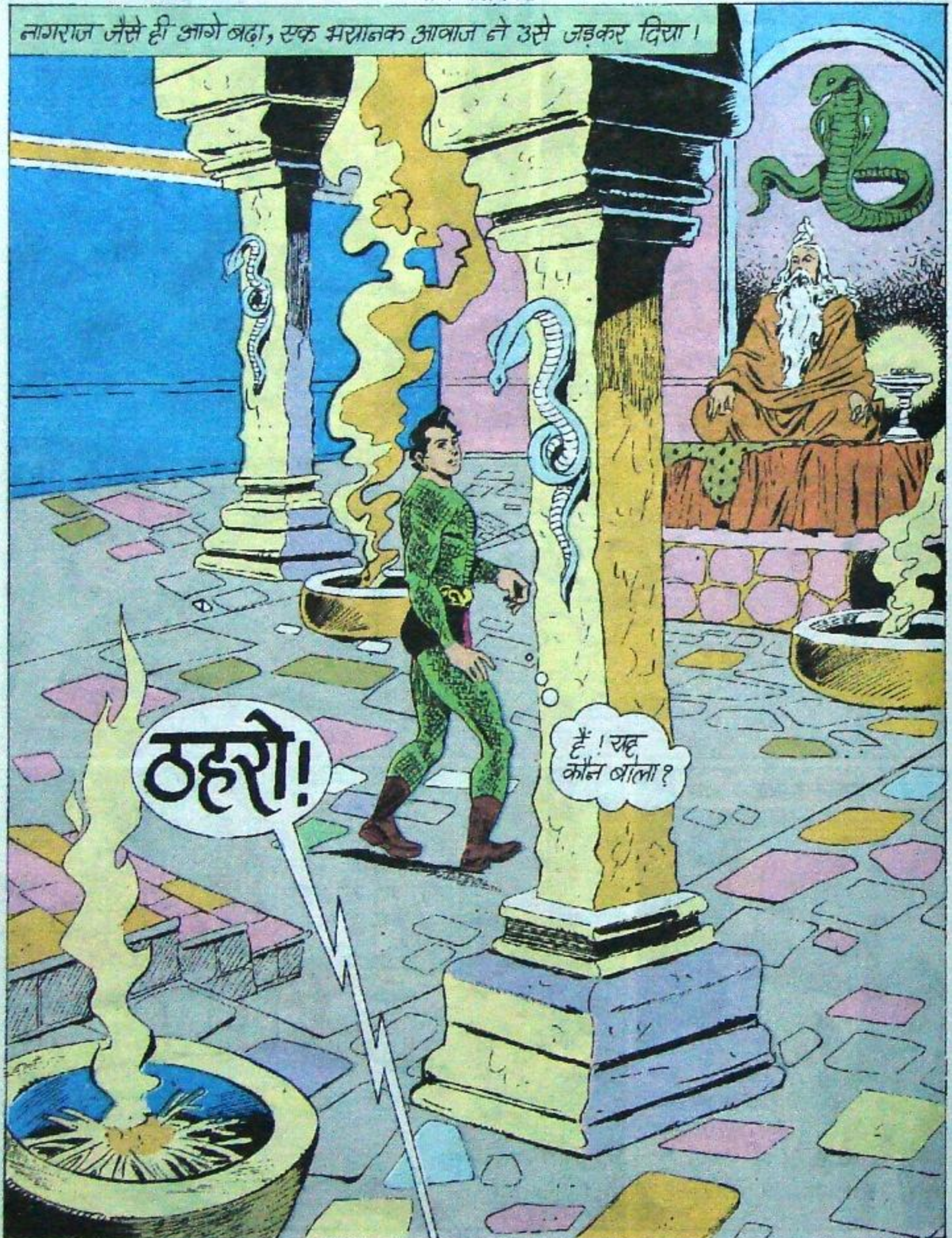
मैं कोबराराज हूं। तुम यहां तक तो पहुंच गए हो दुष्ट बालक। किन्तु अब कोई और अनर्थ करने से पहले मैं तुम्हें यमलोक पहुंचा दूंगा।
ओह, तो तुम ही कोबराराज हो। देखो, पहले मेरी पूरी बात सुन लो - फिर तुम खुद ही मुझे महर्षि से मिलने दोगे।
हर्र र ऽऽ
नहीं, मुझे कुछ नहीं सुनना। बस मरने के लिए तैयार हो जाओ।
कहते ही कोबराराज ने नागराज पर बहुत सारा विष उगल दिया।
नागराज ने एक तरफ कूदकर बचाव किया।
ओह, यह तो कुछ समझता ही नहीं। मुकाबला तो करना ही पड़ेगा।
कोबराराज ने फिर हलाहल से हमला किया।
हर्र ऽऽ
ओह, यह विष मेरे लिए घातक हो सकता है।

अब इससे पहले कि कोबराराज फिर विष उगलता, नागराज उछला —

कीड़या

और कोबराराज को बचाव का कोई भी मौका ना देते हुए नागराज ने अपनी शक्तिशाली ठोकर से कोबराराज का एक फन तोड़ दिया ।

कड़ाक

हिस्स

दर्द से छटपटाते नागराज ने सारी शक्ति संचित करके कोबराराज पर अत्यंत शक्तिशाली विष की फुंकार मारी।
फूऽऽ

विष कोबराराज की आंखों में समा गया। दर्द की अधिकता से उसकी पकड़ ढीली पड़ गई।
हिस्स ऽऽ हिस्स उफ़ मेरी आंखें!
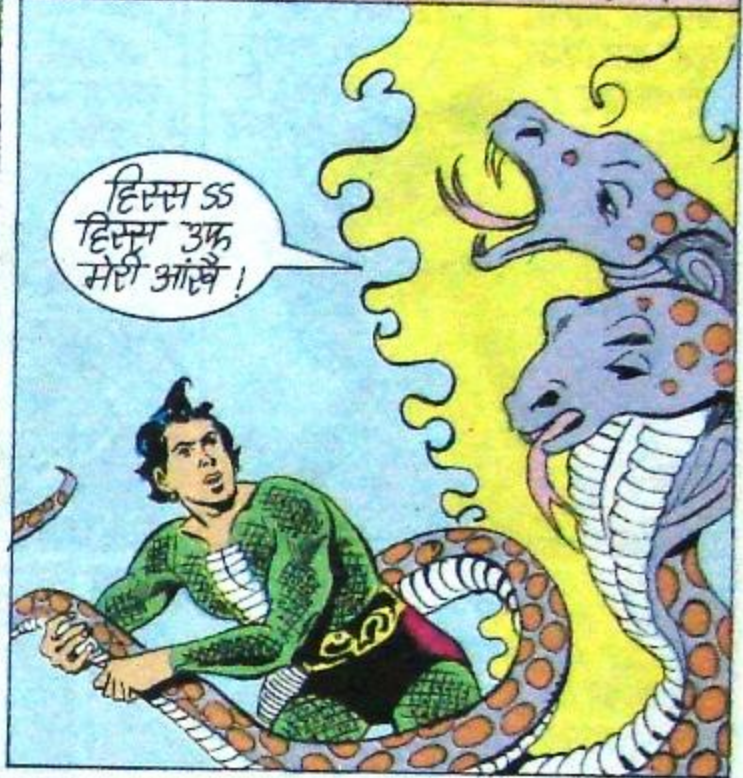
नागराज ने यह अवसर नहीं छोड़ा। उसने कोबराराज की पूंछ पकड़ी और उसे धरती पर पटकने लगा।
अब तुझे बताता हूं कौन यमलोक जाएगा।
सटाक
आह!

धरती से टकराने से कोबराराज का एक सिर और टूट गया।
क्यों, दिखने लगा यमलोक!
आह! महर्षि बचाइए!

फिर नागराज पूंछ छोड़कर उसके फन पर कूदने लगा —
बचाइए महर्षि, मुझे इस इंसान से बचाइए!
इंसान! अरे, बालक कहो बालक! ऐ थम्म!
कोबराराज की चीखों से महर्षि का ध्यान भंग हो गया।
मैं इसे खत्म कर दूंगा।
ठहरो नागराज!
नहीं नागराज! अब तुम इसे नहीं मारोगे। मेरे कहने पर ही इसने तुम्हारा रास्ता रोका था।
?
आपके कहने पर?
हां, हम तुम्हारी परीक्षा लेना चाहते थे कि तुम मणि धारण करने के लायक हो भी या नहीं।
मणि... परीक्षा! मैं कुछ समझा नहीं महर्षि!
वत्स! तुम्हारे गुरु गोरखनाथ ने मुझसे सम्पर्क स्थापित करके तुम्हारे बारे में सब कुछ बता दिया था। तुम्हें दुष्ट टांगो के मुंह से निकलती आग से यह पोलक मणि ही बचा सकती है।...
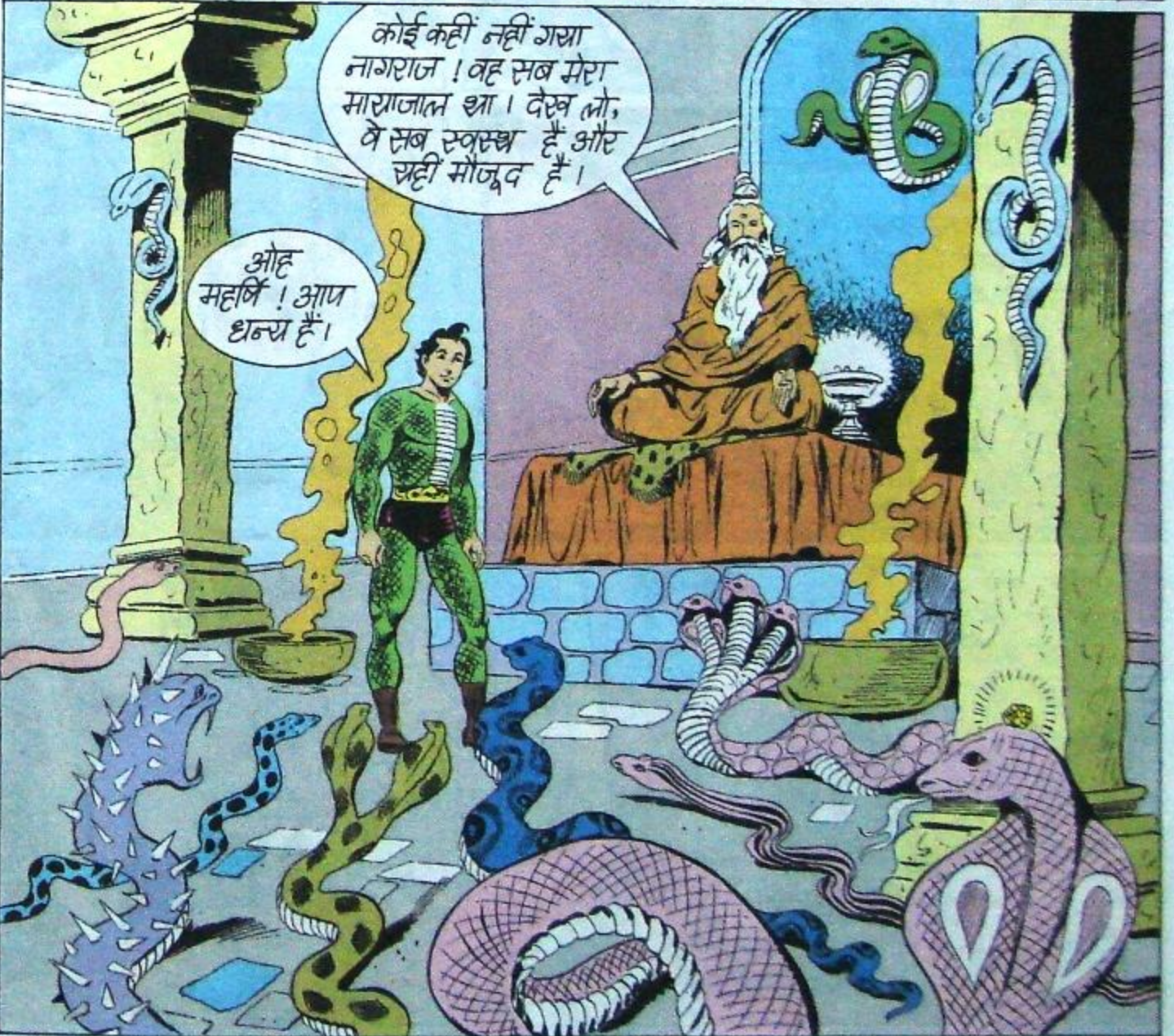
कोई कहीं नहीं गया नागराज! वह सब मेरा मायाजाल था। देख लो, वे सब स्वस्थ हैं और यहीं मौजूद हैं।

ओह महर्षि! आप धन्य हैं।

नागराज ! तुम निश्चय ही वीर हो। कभी हमारी जरूरत पड़े तो अवश्य याद करना। हम तुम्हारी मदद को जरूर आयेंगे।
धन्यवाद दोस्तो ! अब मैं चलूंगा।

फिर महर्षि को प्रणामकर नागराज चल दिया।
सब कितने अच्छे थे।

लावे के प्रपात के आगे वह ठिठका।
ओह, खौलता लावा ! मुझे इसमें चलकर देखना चाहिए कि मणि कितनी उपयोगी है।

ओह, यह गरम लावा तो शीतल जल की भांति प्रतीत हो रहा है !

इधर क्रो नागराज के इंतजार में आसमान पर निगाहें गड़ाए बैठा था।

बेटा! कब तक ऐसे बैठा रहेगा? दो दिन से भूखा है। ले खाना खा ले। वह नहीं आएगा।

वह जरूर आएगा मांजी उसे आना पड़ेगा। उसने मुझसे वादा किया था।

घर्रर्रर्रर्र

भाड़ में गया वो और उसका वादा। वह टागो से डरकर भाग गया है।

लो वह आ गया मां, वह आ गया। गरीबों का मसीहा — नागराज।

नागराज ने हैलीकॉप्टर क्रो के पास उतारा।
लो, मैं आ गया क्रो! अब टांगो और टमटा की खैर नहीं।
हां, नागराज!
क्रो ने फौरन बहुत सी मशालें एकत्रित कीं -
मैं आ रहा हूं टांगो, तेरी टांगें चीरने।
और फिर दोनों खूनी कबीले की तरफ दौड़ पड़े।
खूनी कबीले पहुंचकर उन्होंने एक भयानक दृश्य देखा।
चलो इन अंगारों पर, जो इन्हें पार कर देवता तक पहुंच गया, वह बच जाएगा और जो बीच में रह गया, उसकी बलि चढ़ा दी जाएगी।
नागराज! ये इसी तरह रोज दस-पन्द्रह लोगों की बलि चढ़ाकर उन्हें खा जाते हैं।
उफ! खूनी खेल!

तभी उनकी नजर पोमा, चोमा व सुगा पर पड़ी और उनके मुंह से सिसकारी निकल गई।

देख लो बेवकूफो! तुम तीनों के कारण इन लोगों का यह अंजाम हुआ है और वह नागराज भाग गया ना गीदड़ मुझसे डर के!

नागराज को कुछ ना कह नीच!

सटाक

सट्
भागो
और मजबूर बस्ती वाले जान बचाने के लिए नंगे पांव अंगारों पर दौड़ने लगे।

हा हा हा हा

आह!
आह!
उफ
बस्ती वालों की हृदय-विदारक चीखों से वातावरण थर्रा उठा।

तभी–
आह!

सांप

मौका पाकर बस्ती वाले भाग लिए।
नागराज आ गया।

नागराज और क्रो ने अंदर छलांग लगाई—
नागराज आ गया है हरामजादो! अब तुम नहीं बचोगे।
धाप
नागराज ने बस्ती वालों की तरफ बढ़ते जंगलियों पर नाग छोड़े।
तुम लोग अपने और साथियों को छुड़वाओ!
बचो
सांप
क्रो ने कबीले की झोपड़ियों पर मशालों की वर्षा कर दी।
सां
झोपड़ियां धूं-धूं करके जलने लगीं।
आग
बचाओ... बचाओ...
कबीले वालों में भगदड़ मच गई
रुक जाओ मूर्खो! कहां भाग रहे हो... रुक जाओ।
दुश्मन ने हमला बोल दिया भागो!
हाय!
आग
उसका फायदा उठाकर नागराज और क्रो, लूगा-पोमा-चोमा की तरफ भागे।

नागराज ने पोमा को आजाद किया।
लो दोस्त! सामना करो दुश्मन का।
धन्यवाद नागराज!

क्रो ने पेड़ में धंसे तीर को काट दिया।
स्वट्च

चोमा नीचे गिरा—
उठो दोस्त! जैसे भी हो मुकाबला करो!
नागराज! हम जरूर जीतेंगे।

अगले ही क्षण नागराज ने पलटकर अपनी तरफ बढ़ते एक जंगली को उठा लिया।
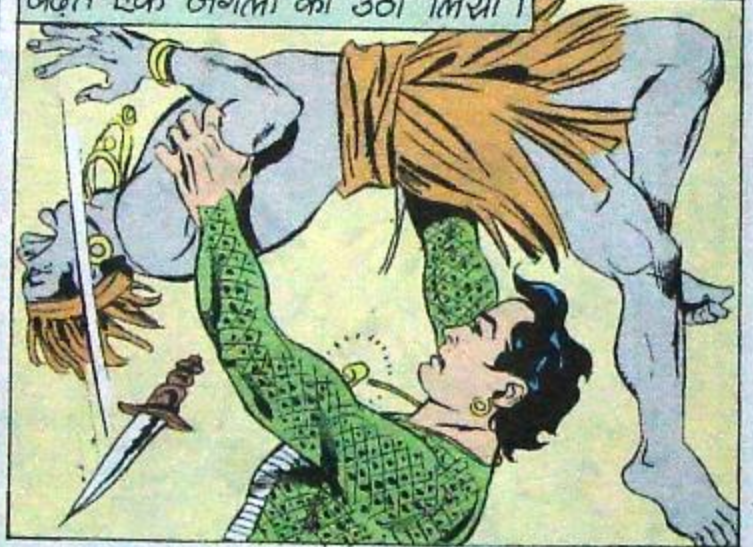
और चाकुओं पर दे मारा
आह
सचाक

तभी क्रो ने ऊपर लटके सुगा के बंधन खोल दिए और...
धप्प
...वह नीचे चाकुओं पर पड़ी लाश पर आकर गिरा।

तीनों को आजाद कराकर नागराज पलटा लेकिन –
धड़ाक

नागराज, अब मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा।
अब तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते टांगो!

दोनों एक-दूसरे से बुरी तरह उलझ गए।

उफ! इस पर तो आग का कोई असर नहीं हो रहा?
उठ टांगो, खड़ा हो। लड़ मुझसे।

टांगो ने एकबार फिर नागराज पर आग उगल दी।
अब यह नहीं बच सकता।

किन्तु आग पोलक मणि से टकराकर वापस पलट गई।

टांगो अपनी ही आग में घिर गया ...
आह.. उफ़ मैं मरा!
... और जलने लगा।

कुछ देर बाद वहां केवल टांगो की राख ही बाकी रह गई थी।
जल मरा पापी!
चलो नागराज! हमने सब बस्ती वालों को छुड़ा लिया है।
हां चलो!

कबीले से बाहर आकर-
सुगा, हम सब अभी टमटा के हैडक्वार्टर पर धावा बोलेंगे।
हां नागराज! हम सब बस्ती वाले तुम्हारे साथ हैं।

कुछ देर बाद बस्ती वालों ने टमटा के हैडक्वार्टर पर हमला बोल दिया।
कोई गोरा बचने न पाये।
मारो!
काटो

बस्ती वाले हैडक्वार्टर में घुस गए और टमटा के सैनिकों से भिड़ गए।
खचाक
धांए
आह!

नागराज, पोमा, चोमा, क्रो और सुगा मारकाट मचाते हुए अंदर टमटा को ढूढ़ रहे थे।
बता टमटा कहां है?
उधर!

इधर जनरल टमटा भी इस बलवे से बेखबर न था।
एक आदमी ने मेरा कितना नुकसान कर दिया। उफ्! एक बार यहां आ जाए फिर वह नहीं बच सकता

तभी –
आओ, हमें तुम्हारा ही इंतजार था नागराज!
मेरा नहीं, अपनी मौत का प्यारे लाल!

जनरल टमटा ने बटन दबाया।
मौत तो मैं तुम्हें दे रहा हूं बच्चो!
घर्र
टमटा ने विशेष सीटी बजाई और...
पीं ई
...चारों गिद्ध बाहर आ गए...

...और पांचों पर झपट पड़े।
नागराज! यह तो हमें समूचे ही निगल जायेंगे।
ओह, यह क्या?
चीं ईं

एक गिद्ध ने क्रो को अपनी चोंच से घायल कर दिया।
किच
आह! नागराज, बचाओ!

नागराज ने अपनी तरफ बढ़ते गिद्ध पर नाग छोड़ा।

सुगा ने भी की तरफ बढ़ते गिद्ध पर चाकू फेंका—

चोमा व पोमा ने भी वही तरकीब अपनाई।

अंधे गिद्ध इधर-उधर पंजे मारने लगे।

गिद्ध किसी को न पाकर सीटी बजाते टमटा पर ही टूट पड़े।

कुछ ही देर में वे उसे चट कर गए।

टमटा के मरते ही लोगों ने बहुमत से शासन की बागडोर सुगा को सौंप दी

फिर नागराज उनसे विदा लेकर अपने अगले अभियान पर चल पड़ा।

समाप्त।